आधुनिक भारतीय चिंतन

डॉ. रामकिशन वसंतराव लोमटे

TULJARAM CHATURCHAND COLLEGE
BARAMATI

Principal
Tuljaram Chaturchand College
Baramati

Scanned with CamScanner

आधुनिक भारतीय चिंतन

सम्पादक
डॉ. रामकिशन वसंतराव लोमटे
प्राध्यापक तथा विभाग प्रमुख राजनीतिशास्त्र
श्री संत सावता माली ग्रामीण महाविद्यालय फुलंब्री जी. औरंगाबाद

Vanya
वान्या पब्लिकेशंस
कानपुर - 208021 (उ.प्र.)

TULJARAM CHATURCHAND COLLEGE BARAMATI
Principal
Tuljaram Chaturchand College
Baramati

Scanned with CamScanner

ISBN : 978-93-91119-86-7
मूल्य : आठ सौ रुपये मात्र

पुस्तक	:	आधुनिक भारतीय चिंतन
सम्पादक	:	डॉ. रामकिशन वसंतराव लोमटे
©	:	सम्पादक
प्रकाशक	:	वान्या पब्लिकेशंस 3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर - 208 021 Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com info@vanyapublications.com Website : www.vanyapublications.com Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	प्रथम, 2022
मूल्य	:	800.00
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	सार्थक प्रेस, कानपुर

TULJARAM CHATURCHAND COLLEGE BARAMATI
Principal
Tuljaram Chaturchand College
Baramati

Scanned with CamScanner

15. महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा तत्व : सृष्टि के वरदान
डॉ. तात्या बाळाकिसन पुरी 98

16. गांधीवाद
कृपादेवी आनंदराव पाटील 102

17. आज के परिपेक्ष्य में गांधी विचारों की प्रासंगिकता
प्रेम चव्हाण 109

18. सरदार वल्लभभाई पटेल और राष्ट्रीय एकता
प्रा. महेश शामराव दाडगे 114

19. भारत की अखंडता के लिए बलिदान – डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी
डॉ. संदिप जगन्नाथ जगताप 118

20. जवाहरलाल नेहरू और लोकतंत्र
डॉ. हनुमंत फाटक 123

21. भारतीय राजनीति में पंडित जवाहरलाल नेहरू का योगदान
डॉ. एस. डी. पोटभरे 128

22. जवाहरलाल नेहरू के लोकतंत्रवादी विचार
बालाजी भाऊसाहेब दळवे 134

23. डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की न्याय की अवधारणा
प्राचार्य डॉ. घुमरे एल.बी. 140

24. एम.एन. रॉय और लोकतांत्रिक क्रांति
डॉ. हनुमंत फाटक 145

25. जयप्रकाश नारायण का राजनीतिक चिंतन
बाबासाहेब छबुराव लहाने 155

26. डॉ. राममनोहर लोहिया : विचारों का परिचय...
प्रा. विजय संभाजी संबेटवाड, डॉ. प्रभाकर रघुनाथ जगताप 159

27. पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद
डॉ. सुनिल पिंपळे 168

28. पंडित दीनदयाल उपाध्याय की अर्थनीती
डॉ. पांडुरंग मारोतराव कल्याणकर 173

29. भारतीय बीज उद्योग के जनक पद्मभूषण डॉ. श्री बद्रीनारायण बारवाले
डॉ. महेश भाऊसाहेब थोरात 183

TULJARAM CHATURCHAND COLLEGE BARAMATI
Principal
Tuljaram Chaturchand College
Baramati

Scanned with CamScanner

20

जवाहरलाल नेहरू और लोकतंत्र

डॉ. हनुमंत फाटक

नेहरू के राजनीतिक दर्शन की आधारशिला व्यक्ति है। उनका मानना था कि, उनका सर्वांगीण विकास उसी समाज में संभव हो सकता है जो सभी क्षेत्रों में स्वतंत्रता और समान अवसर सुनिश्चित करें। इसलिए लोकतंत्र की उनकी अवधारणा जीवन के सभी पहलुओं को समाहित करती है। लोकतंत्र को परिभाषित करते हुए, उन्होंने यह स्पष्ट किया कि लोकतंत्र उनके लिए सरकार का एक रूप, सामाजिक–आर्थिक संरचना का एक रूप, जीवन का एक तरीका और एक मानसिक दृष्टिकोण है। वयस्क मताधिकार, चुनाव, नागरिक स्वतंत्रता, कानून के शासक और राजनीतिक दलों के साथ एक पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था पूर्ण लोकतंत्र की दिशा में पहला कदम था। जिसमें आर्थिक और सामाजिक समानता भी शामिल थी। गरीबी, अभाव, भूख और भुखमरी के बीच राजनीतिक लोकतंत्र नहीं पनप सकता। इसलिए आर्थिक लोकतंत्र सभी के लिए आर्थिक न्याय सुनिश्चित करना, जनता के कल्याण की देखभाल करना, सत्ता के एकाधिकार को समाप्त करना और धन की एकाग्रता को समाप्त करना और आम आदमी की भौतिक उन्नति के लिए काम करना लोकतंत्र का सार है। लेकिन इस तरह का लोकतंत्र अपने आप में अधूरा है। अगर सामाजिक और मानवीय समानता नहीं है, अगर वर्गों के बीच सामाजिक विषमताएं हैं। नेहरु के लिए सामाजिक लोकतंत्र का मतलब जाति, पंथ, जन्म, धन स्थिति और नस्ल के आधार पर मनुष्यों के बीच कोई भेदभाव नहीं था। न केवल व्यक्तियों बल्कि समूहों और राष्ट्रों को भी स्थिती की समानता का आनंद लेना चाहिए। लेकिन एक अनपढ़ व्यक्ति के लिए वोट और सामाजिक–आर्थिक समानता का कोई वास्तविक मूल्य नहीं है। नेहरू के लिए लोकतंत्र कुछ ऐसा था जिसमें आध्यात्मिक सामग्री भी थी और इसीलिए उन्होंने शिक्षा को लोकतंत्र की सबसे आवश्यक पूर्वापेक्षाओं में से एक माना। आत्म–अनुशासन और दूसरों की राय के लिए सहिष्णुता शिक्षा द्वारा विकसित किए गए गुण हैं और उनके बिना लोकतंत्र का अंत हो जाएगा।

TULJARAM CHATURCHAND COLLEGE BARAMATI *
Principal
Tuljaram Chaturchand College
Baramati
Scanned with CamScanner

नेहरू के लिए लोकतंत्र परस्पर विरोधी सिध्दांतों में सामंजस्य स्थापित करने और दो चरम दृष्टिकोणों के बीच सही संतुलन बनाने का सबसे अच्छा तरीका था। एक लोकतंत्र में व्यक्तिगत अच्छाई इस तरह से प्राप्त की जानी चाहिए। जो सामाजिक पूरे की भलाई में भी योगदान दे। सहयोग की भावना और जिम्मेदारी की भावना वह संतुलन लाएगी जो एक लोकतंत्र में है; की आवश्यकता है। यद्यपि स्वतंत्रता और समानता दोनों व्यक्ति के पूर्ण विकास के लिए आवश्यक हैं, फिर भी नेहरु ने दोनों के बीच संघर्ष की संभावना को महसूस किया। अगर पूर्ण स्वतंत्रता दी जाती है, तो यह किसी की समानता में हस्तक्षेप कर सकती है। लोकतंत्र को यह देखना है कि दोनों चाप बिना किसी हार के सुनिश्चत हों।

व्यक्तिगत स्वतंत्रता भी राज्य की शक्ति के साथ संघर्ष में आती है। नेहरु ने राज्य को व्यक्तिगत अच्छे को बढ़ावा देने के साधन के रूप में माना, लेकिन वे चरम प्रकार के व्यक्तिवादी नहीं थे। न तो व्यक्ति और न ही राज्य पूर्ण है और इसलिए न तो पूर्ण राज्य शक्ति हो सकती है और न ही पूर्ण स्वतंत्रता। जब स्वतंत्रता दायित्वों और आत्म–अनुशासन के साथ नहीं होती है, तो राज्य को मनुष्य में स्वार्थी प्रवृत्ति को नियंत्रित करने के लिए अपनी जबरदस्त प्रक्रियाओं का उपयोग करना पड़ता है।

केंद्रीकरण सभी आधुनिक राज्यों की सबसे बड़ी तकनीकी आवश्यकताओं में से एक बन गया है। लेकिन तथ्य यह है कि, जितना अधिक केंद्रीकरण होगा, व्यक्तिगत स्वतंत्रता उतनी ही कम होगी। फिर भी नेहरु ने महसूस किया कि, दोनों को संतुलित किया जा सकता है। यदी कोई समाज कुछ लोकतांत्रिक नियंत्रण वयस्क मताधिकार का पालन करता है और निर्वाचित संसद जो सरकार पर नियंत्रण रखेगी। समाजवाद और लोकतंत्र के बीच एक संश्लेषण को प्रभावित करके केंद्रीकरण की इस समस्या को हल किया जा सकता है। इस प्रकार, लोकतंत्र एक मध्यम मार्ग है जो चरम सीमाओं से बचकर सद्भाव और संतुलन लाता है।

हिंसा मनुष्य को नीचा दिखाती है और यह किसी व्यक्ति के एकीकृत विकास में सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है। लोकतंत्र विभिन्न परस्पर विरोधी हितों के बीच आम सहमति और समझौता पर निर्भर करता है। नेहरू का मानना था कि, इस शांतिपूर्ण और अहिंसक दृष्टिकोण को सभी क्षेत्रों में नियोजित किया जाना चाहिए। सरकार के निर्णयों को प्रभावित करने के लिए लोगों को असंसदीय और अलोकतांत्रिक साधनों, हिंसक आन्दोलनों, अनशनों, अनुशासनहीन प्रदर्शनों आदि में शामिल होना चाहिए। सरकार द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए

TULJARAM CHATURCHAND COLLEGE BARAMATI

Principal
Tuljaram Chaturchand College
Baramati

Scanned with CamScanner

बहुमत और अल्पसंख्यक के बीच एक सामंजस्यपूर्ण संबंध मौजूद होना चाहिए, जो कि हिंसा के जबरदस्त दबाव से बहुमत को मजबूर करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। यदि शांतिपूर्ण साधनों को नहीं अपनाया जाता है, तो वह लोकतंत्र नहीं है।

इसी प्रकार सामाजिक–आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तन, क्रमिक, शांतिपूर्ण और सामान्य सद्भावना के आधार पर होना चाहिए। कानून मदद करने के लिए है, जबरदस्ती करने के लिए नहीं। नेहरु कानून के माध्यम से सामाजिक सुधार प्राप्त कर सकते थे और मानसिक रूप से बीमार लोगों पर इस तरह के किसी भी बदलाव को लागू करने से इनकार कर दिया। उसी तरह उनके द्वारा सहमति के आधार पर समाजवाद और नियोजन को स्वीकार किया गया। क्रमिक और शांतिपूर्ण दृष्टिकोण पर उनका जोर योजना के पूरे ढांचे में स्पष्ट है, जो व्यापक संभव चर्चा का परिणाम है। जमींदारों की बलि दिए बिना भूमि सुधार किए गए। वह हर गांव में जाने के लिए तैयार थे, ताकि लोगों को शांतिपूर्ण दृष्टिकोण स्वीकार करने के लिए पूरी संरचना में स्पष्ट रूप से स्पष्ट किया जा सके– भूमि सुधार किए गए। वह लोगों को सहकारी खेती स्वीकार करने के लिए हर गांव में जाने के लिए तैयार था लेकिन थोपने और हुक्म चलाने से इनकार कर दिया। भारत के विशेष संदर्भ में उन्होंने हमेशा भाषाई राज्यों, भाषा विवाद और गोहत्या जैसी समस्याओं के समाधान में शांतिपूर्ण दृष्टीकोण की वकालत की।

लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के प्रति अपने गहरे लगाव के कारण नेहरु ने तानाशाही तरीकों और सत्तावादी तरीकों और शासनों से बहुत घृणा की। द्वितीय विश्व युध्द के दौरान मित्र राष्ट्रों के साथ उनकी सहानुभूति क्योंकि वे फासीवाद और नाजीवाद की चुनौती के खिलाफ लड़ रहे थे। साम्यवाद के सामाजिक आदर्श में विश्वास करते हुए, उन्होंने स्वतंत्रता, हिंसा और तानाशाही तरीकों के दमन को पूरी तरह से नापसंद किया। अपने सत्तावादी दृष्टिकोण के कारण धर्म में भी उनके लिए कोई अपील नहीं थी, जिसने स्वतंत्र सोच और स्वतंत्र जांच के रास्ते को अवरुध्द कर दिया। वह जातिवाद, साम्प्रदायिकता और जातिवाद से घृणा करते थे। क्योंकि वे बहुत से लोगों पर कुछ के प्रभुत्व पर आधारित थे। यहाँ तक कि संयुक्त परिवार को भी उन्होंने स्वीकार नहीं किया क्योंकि इसने व्यक्तिगत विकास को अवरुध्द कर दिया। शिक्षण संस्थानों में उन्हें बिना किसी सरकारी हस्तक्षेप के विचारों और विचारों का मुक्त प्रवाह पसंद था। प्रेस और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को उनके द्वारा लोकतांत्रिक जीवन शैली का आवश्यक तत्व माना जाता था। इस प्रकार, कुछ भी सत्तावादी

TULJARAM CHATURCHAND COLLEGE BARAMATI
Principal
Tuljaram Chaturchand College
Baramati
Scanned with CamScanner

उनकी लोकतांत्रिक सोच के लिए विदेशी था, क्योंकि झूठ एक मानवतावादी था।

लोकतंत्र को वास्तविक और जीवित रहने के लिए समय और स्थिति की बदलती आवश्यकता के अनुसार खुद को अनुकूलित और समायोजित करना चाहिए। नेहरु ने बार–बार इस बात पर जोर दिया कि, आधुनिक वैज्ञानिक युग के बदले हुए संदर्भ में उन्नीसवीं सदी की लोकतांत्रिक अवधारणा पर्याप्त नहीं थी। तेजी से तकनीकी प्रगति के कारण जनता भौतिक कल्याण की नई चेतना के प्रति जागृत हुई है। गरीबी, भूख, बेरोजगारी और निरक्षरता की समस्याओं के समाधान के लिए लोकतंत्र को खुद को ढालना चाहिए; अन्यथा इसके भाग्य को सत्तावादी शासन द्वारा बढ़ाया जाएगा।

इस सदी में विशाल अखंड राज्यों का उदय पूरे विश्व में लोकतंत्र के लिए एक गंभीर चुनौती पेश कर रहा है। दो महान विश्व युध्दों ने उदार और जीवन के उच्च मूल्यों में मानव जाति के विश्वास को झकझोर दिया है और अगर लोकतंत्र आज दुनिया की बदली हुई परिस्थितियों में खुद को समायोजित नहीं करता है। तो उसे लंबे समय तक जारी रहने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। नेहरू का गैर–सिद्धांतवादी और गतिशील दृष्टिकोण भारतीय परिस्थितियों के अनुसार लोकतांत्रिक आदर्शो की उनकी व्याख्या से स्पष्ट था।

बहु–धार्मिक और सांप्रदायिक–उन्मुख भारत के लिए उनके धर्मनिरपेक्षता का मतलब चर्च और राज्य का अलगाव नहीं था। जैसा कि आमतौर पर पश्चिम में समझा जाता है, बल्कि धार्मिक स्वतंत्रता, विश्वासों की समानता और व्यापक सहिष्णु पर आधारित एक सामाजिक दर्शन है।

मानसिक दृष्टिकोण अन्य देशों में अज्ञात एक अवधारणा है। उन्होंने भारत में लोकतांत्रिक योजना की अवधारणा को लागू किया। लेकिन राष्ट्रीयकरण की वकालत वहीं की जहाँ इसकी आवश्यकता थी। उन्होंने नागरिक स्वतंत्रता सुनिश्चित की लेकिन दृढ़ता से माना कि हिंसा, अव्यवस्था और असामाजिक गतिविधियों की स्थितियों के कारण, कुछ प्रतिबंधों की बहुत आवश्यकता थी जो पश्चिमी लोकतंत्रो के लिए विदेशी हो सकते है। समानता लोकतंत्र द्वारा पोषित एक सिध्दांत है, लेकिन भारत में कई पिछड़े वर्गो के अस्त्वि को देखते हुए इसे एक नया अर्थ देना होगा, जिन्होंने प्रगति के लिए विशेष अवसरों की मांग की थी। शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य व्यक्ति के विकास का है, लेकिन नेहरु का जोर वैज्ञानिक, तकनीकी और बुनियादी शिक्षा पर था। क्योंकि वे भारत की परिस्थितियों के अनुकूल थे। इस प्रकार सभी लोकतांत्रिक सिध्दांतों का मूल्य तभी है जब वे गतिशील हों उन पर की गई नई मांगों के लिए खुद को

Principal
Tuljaram Chaturchand College
Baramati

TULJARAM CHATURCHAND COLLEGE * BARAMATI

Scanned with CamScanner

समायोजित और अनुकूलित करें। प्रत्येक पीढ़ी और प्रत्येक देश को लोकतंत्र का अपना पैटर्न खोजना होगा।

संदर्भ

1. Ja¡harlal Nehru, An Autobiography. New Delhi, Ja¡harlal Nehru] rpt. 1982.
2. Dikshit, Sheila. Etal. Ja¡harlal Nehru Centenary Volume. Delhi: OUP, 1989.
3. Gopal, Sarvepalli. Ja¡harlal Nehru: a Biography Volume One 1889-1947 Bombay:OW, 1975.
4. Rap and Raghavan. Ja¡harlal Nehru : A Study of His Writings and Speeches. Mysore, 1960.

❖

TULJARAM CHATURCHAND COLLEGE * BARAMATI

Principal
Tuljaram Chaturchand College
Baramati

Scanned with CamScanner